ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–66
दिनांक: शुक्रवार, 28 अगस्त,2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन केअनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.3 एवं 25. 0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 78 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.6 एवं दोपहर में 36.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि 3.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(29 अगस्त –02 सितंबर,2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 29 अगस्त से **02** सितंबर, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि के अधिकतर दिनों में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। 30 अगस्त से 01 सितम्बर के बीच बेगूसराय, दरभंगा, समस्तीपुर, सीवान, वैशाली, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, पूर्वी एवं पश्चिमी चंपारण जिलों के अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। इन जिलों के कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने की संभावना है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 32–36°C के बीच, जबकि न्यूनतम तापमान 24–28°C के बीच रहने की संभावना है।
- सुबह के समय सापेक्ष आर्द्रता लगभग 90% तथा दोपहर के समय 50–55% के आसपास रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान अवधि में हवाएं मुख्यतः पूर्वी एवं दक्षिण–पूर्वी दिशाओं से 10–25 किमी प्रति घंटा की गति से चलने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- धान: धान की फसल में तना छेदक, पत्ती लपेटक एवं भूरा फुदका (बीपीएच) कीट की नियमित निगरानी करें। तना छेदक एवं पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4-जी दवा 20–25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से देर दोपहर के बाद पूरे खेत में समान रूप से प्रयोग करें। देर से बोई गई धान की फसल में खैरा रोग की निगरानी करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट एवं 2.5 किलोग्राम चूने को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। भूरा फुदका का अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एससी दवा 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- मक्का: मक्का की फसल में तना छेदक एवं फॉल आर्मीवर्म के प्रकोप की नियमित निगरानी करें। तना छेदक के लक्षण दिखाई देने पर प्रभावित पौधों के गाभा में कार्बोफ्यूरान 3-जी दवा 7 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फॉल आर्मीवर्म के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट दवा 0.5–0.6 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर प्रथम छिड़काव के 7 दिन बाद कोराजेन दवा 0.5–0.6 मिली प्रति 15 लीटर पानी की दर से दूसरा छिड़काव करें।
- अरहर: अरहर की बुआई 25 अगस्त से 15 सितंबर तक ऊँचास जमीन तथा धान की रोपाई न होने के कारण खाली खेतों में करें। *शरद, पूसा–9* एवं *राजेंद्र अरहर–1* किस्मों का चयन करें। बीज दर 45–50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा कतार एवं पौधे की दूरी 30×10–15 सेमी रखें। 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 45 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। बुआई के 25–30 दिन बाद 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें तथा इसके बाद निराई–गुड़ाई करें। जिंक की कमी वाली मिट्टी में बुआई के समय 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- परवल: परवल की बुआई इस हफ्ते तक पूरा कर लें। उत्तर बिहार के लिए *राजेंद्र परवल–1, राजेंद्र परवल–2, राजेंद्र परवल–3, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक* एवं *स्वर्ण सुरभि* किस्मों का चयन करें। पौधों एवं कतारों के बीच 150×100 सेमी की दूरी रखें। भूमि की तैयारी के समय 20–25 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फसल की अच्छी वृद्धि एवं विकास के लिए 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- मिश्रीकंद: ऊँचास जमीन वाले क्षेत्रों में मिश्रीकंद की बुआई करें। उत्तर बिहार के लिए *राजेंद्र मिश्रीकंद–1* एवं *राजेंद्र मिश्रीकंद–2* किस्में अनुशंसित हैं। अगस्त में बुआई के लिए 30–40 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर तथा 30 × 15 सेमी की दूरी और सितंबर में बुआई के लिए 50–55 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर तथा 15×15 सेमी की दूरी रखें। 200 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट, 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 80 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। बुआई के समय नाइट्रोजन की आधी तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा दें। शेष आधी नाइट्रोजन की मात्रा बुआई के 40–45 दिन बाद उपरिवेशन के रूप में दें।
- शकरकंद: शरदकालीन शकरकंद की फसल के लिए खेत की तैयारी पूरी करें। उचित जल निकास वाली हल्की बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त है। खेत की 2–3 बार जुताई एवं समतलीकरण करें तथा पहली जुताई से पहले 100 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाएं। अंतिम भूमि तैयारी के समय 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। 30×30 सेमी की दूरी पर रोपाई करें। रोपाई अगस्त के अंतिम सप्ताह से सितंबर तक की जा सकती है। उत्तर बिहार के लिए *राजेंद्र शकरकंद–5, राजेंद्र शकरकंद–35, राजेंद्र शकरकंद–47, राजेंद्र शकरकंद–43, श्री भद्रा, कालमेघ* एवं *राजेंद्र शकरकंद–92* किस्में अनुशंसित हैं।
- बैंगन: बैंगन में तना एवं फल छेदक कीट की नियमित निगरानी करें। रोपाई के 10 दिन बाद प्रारंभिक प्रबंधन के लिए पौधे के जड़ क्षेत्र के आसपास फ्यूराडान 3-जी दवा 1 ग्राम प्रति पौधा की दर से डालकर मिट्टी में मिलाएं। खड़ी फसल में प्रभावित टहनियों एवं फलों को तोड़कर हटाएं तथा कीटनाशी के छिड़काव से पहले संक्रमित पौध भागों को एकत्र कर मिट्टी में दबा दें। अधिक प्रकोप होने पर स्पिनोसैड 48 ईसी दवा 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः 34.6 डिग्री सेल्सियस, जो से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.6डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी